
अपठित काव्यांश क्या है?

वह काव्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है, अपठित काव्यांश कहलाता है। परीक्षा में इन काव्यांशों से विद्यार्थी के भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

परीक्षा में प्रश्न का स्वरूप

परीक्षा में विद्यार्थियों को 100 से 150 शब्दों का कोई काव्यांश दिया जाएगा। उस काव्यांश से संबंधित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा तथा कुल प्रश्न पाँच अंक के होंगे।

प्रश्न हल करने की विधि-

अपठित काव्यांश का प्रश्न हल करते समय निम्नलिखित बिंदु ध्यातव्य हैं-

- विद्यार्थी कविता को मनोयोग से पढ़ें ताकि उसका अर्थ समझ में आ जाए। यदि कविता कठिन है तो इसे बार-बार पढ़ें ताकि भाव स्पष्ट हो सके।
- कविता के अध्ययन के बाद उससे संबंधित प्रश्नों को ध्यान से पढ़िए।
- प्रश्नों के अध्ययन के बाद कविता को दोबारा पढ़िए तथा उन पंक्तियों को चुनिए जिनमें प्रश्नों के उत्तर मिलने की संभावना हो।
- जिन प्रश्नों के उत्तर सीधे तौर पर मिल जाएँ, उन्हें लिखिए।
- कुछ प्रश्न कठिन या सांकेतिक होते हैं। उनका उत्तर देने के लिए कविता का भाव-तत्त्व समझिए।
- प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट होने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए।
- उत्तर अपने शब्दों में लिखिए।
- प्रतीकात्मक व लाक्षणिक शब्दों के उत्तर एक से अधिक शब्दों में दीजिए। इससे उत्तरों की स्पष्टता बढ़ेगी।

अपठित काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांश तथा उन पर आधारित प्रश्नोत्तर ध्यानपूर्वक पढ़िए-

1.क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान-पतन,

मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल
आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन।

मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

प्रश्न

(क) उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के स्वभाव की किन्हीं दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 1

(ख) कविता में आए मेघ, विद्युत, सागर की गर्जना और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं? कवि ने उनका संयोजन यहाँ क्यों किया है? 1

(ग) 'शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने कभी चयन'-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(घ) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है? उसे कमजोर क्यों बताया गया है? 1

(ङ) किन पंक्तियों का आशय है-तन-मन में दृढ़निश्चय का नशा हो तो जीवन मार्ग में बढ़ते रहने से कोई नहीं. रोक सकता?

